कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग -"1" (खण्ड -1)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें........

प्रश्न सं-1- सकाश देने की सेवा करने के लिए ....बन बेहद के वैरागी बनो ?

A -लगावमुक्त

B- मोहमुक्त

C- न्यारे

प्रश्न सं- 2- संकल्प रूपी बीज को सदा

समर्थ बनाने वाले ....भव ?

A- योगी तू आत्मा

B- ज्ञानी तू आत्मा

C- दोनों उत्तर सही

प्रश्न सं 3- इनमें कौनसा सही नहीं?

A. जितना निराकारी स्थिति में रहेंगे

उतना ही निरंहकारी और निर्विकारी

भी रहेंगे।

B. विकार की कोई बदबू नहीं रहेगी।

यह है मुख्य बात।

C. तीन बातें निराकारी,निर्विकारी और निरहंकारी रखने से

त्रिकालदर्शी बन जायेंगे।

D. भविष्य में फिर विश्व के मालिक।

प्रश्न सं 4- ब्रह्मा बाप ब्रह्मा बना ही तब

जब बाप-दादा क्या हुए?

A- कम्बाइन्ड

B- कम्पेनियन

C- साथी

D- B और C

प्रश्न सं 5-सलामत किसे कहेंगे?

A - जो अपनी तकदीर की महिमा

गाते रहते हैं।

B- जो उठते-बैठते बाप की याद में

रहते हैं।

C- जो यह समझते हैं हम भविष्य में विश्व के मालिक बनेंगे,शिव बाबा नहीं वह तो विश्व के रचता हैं।

D- A, B और C सही

E- A और B सही

प्रश्न सं 6- किसने ही तुमको कब्रदाखिल

कर दिया है, इसको प्वाइज़न/विष कहा

जाता है?

A विकर्म

B विकार

C रावण

प्रश्न सं 7-- श्रेष्ठ कर्म का सहज सिम्बल/प्रतीक कौन है ?

A अव्यक्त ब्रह्मा

B मम्मा

C-ब्रह्मा बाप

D- B & C

प्रश्न सं 8- .... पर बैठ कर्म करते हो तो वो कर्म भी कितने श्रेष्ठ होते हैं। क्योंकि सर्व कर्मेंन्द्रियां लॉ और ऑर्डर पर रहती हैं ?

A- अकाल तख्त

B- दिलतख्त

C- राज्यतख्त

D- A और B

E- A और C

खण्ड-1 प्रश्नोत्तरी के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1-A लगावमुक्त

वास्तव में सकाश सेवा के लिए जितनी श्रेष्ठ पुरूषार्थी स्थिति हो उतना अच्छा है।

हालांकि तीनों उत्तर क्रमवार (नम्बरवार) सही हैं।पर सबसे उपयुक्त जवाब का चयन करने के लिए कहा गया है।बाबा ने अनेक मुरलियों में सकाश सेवा के लिए लगावमुक्त की चर्चा की है।

लगाव आसक्ति का पर्यायवाची शब्द है।बाबा के साथ अन्य जगह भी पढा है कि *आसक्ति दुखों का मूल है*।रही मोह की बात विकारों मे 5 वे क्रम पर आता है, हम जब पवित्र जीवन जीने लगते हैं तो क्रोध आदि शनै शनै कमतर होते रहते हैं।

उत्तर सं 2- B- ज्ञानी तू आत्मा

वरदान आधारित प्रश्न है। श्रेष्ठ पुरूषार्थी तो A & B दोनों होता है। पर सवाल पर गौर करें तो यहां संकल्प रूपी बीज को समर्थ होने अर्थात ज्ञानी सम्बन्धित बात की गई है। संकल्प रूपी बीज का सम्बन्ध योगी से नहीं हो सकता।हमारे मन में पहले विचार-संकल्प-वाणी- कर्म की श्रृंखला चलती है।

उत्तर सं 3 -C - विकल्प B को छोड़कर सभी वाक्यांश बाबा के महावाक्य हैं।विकार की बदबू रहेगी। मुरली में पढा है इन्द्र परी की कहानी जिसका सन्दर्भ काम विकारियों को बाबा मिलन मे न लाने से है।

उत्तर सं 4- A-कम्बाइंड

इस प्रश्न का उत्तर कम्बाइंड अधिकतर ब्रह्मावत्सों ने दिया है।सही है कि शिव बाबा को इन स्थूल नेत्रों के द्वारा न देख सकते और न सुन सकते हैं। बाप को समुख ज्ञान सुनने के लिए ब्रह्मा तन का

सहारा लेना होता है। जब बाप दादा कम्बाइंड होते तभी ब्रह्मा द्वारा ज्ञान सुना सकें।

2 & 3 विकल्प क्रमशः कम्पेनियन और साथी के सन्दर्भ में मुरली में कई बार आया है कि हमें बाबा के अतिरिक्त जो अपने सम्बन्धी दिव्य भाई बहन होते हैं, उनमें 1-2 को पुरूषार्थ में उन्नति के लिए कम्पेनियन या साथी बनाना चाहिए।

उत्तर सं 5 - D

यहां विशेष स्मरण करा दें बाबा से योग लगाना दो तरह का है। 1-एकान्त एकनिष्ठ होकर बाबा से योग लगाना ।2-उठते बैठते या कर्म करते हुए,दूसरी श्रेणी के योग को चार्ट में गणना नहीं करते। पर इसका मतलब यह भी नहीं की इस याद का महत्व कम है।

पर केवल बाबा की याद ही हम ब्रह्मावत्सों को 16 कला सम्पन्न /सलामत नहीं रहने देगी।उत्तर तभी सही हो सकता था जब शुरू के 3 विकल्प होते हैं।सदा सलामत/ कुशलतापूर्वक/ सुरक्षित न सिर्फ उठते बैठते बाबा को याद करना अपितु स्वयं की महिमा अर्थात्,विविध स्वमानों का अभ्यास,विश्व के मालिक,जो

पाना था सो पा लिया आदि आदि विविध महावाक्यों से स्वयं को गौरवान्वित महसूस कराना भी स्वयं को सलामत रखने में आयेगा। D उत्तर के आधार पर है।

उत्तर सं 6- B - विकार

कब्रदाखिल अर्थात् अकाले अवसान/मृत्यु हमें रावण और विकारों दोनों ने बनाया ।पर बाबा ने मुरलियों में कब्रदाखिल बनाने का विष 5 विकारों को ही बताया है।सबमें 5 विष एक समान नहीं अपितु अति-न्यून भी होते।

विकर्म तो इन विकारों के कारण होते हैं जिन्हें रावण राज्य में जन्मजन्मान्तर भुगतते हैं।

उत्तर 7 - C ब्रह्मा बाप

अव्यक्त मुरली से -ब्रह्मा बाप मुरली से-श्रेष्ठ कर्म का सहज सिम्बल ब्रह्मा बाप है इसलिये आप सभी विशेष पुरुषार्थ का शब्द यही वर्णन करते हो कि बाप समान बनना है। हम सभी को ब्रह्मा बाप समान संपूर्ण स्थिति को प्राप्त करना हैं । हमारा अगर उनसे सच्चा प्यार हैं तो हमे उन्हे फ़ॉलो करना।अनेक मुरलियों में इस

तरह से बाबा ने ब्रह्म बाबा को सिम्बल बनने को कहा। एक मुरली अनुसार- पुरुषार्थ करना चाहिए कि मम्मा बाबा को फालो करें, बहुत मीठा बनें। फालो और प्रतीक में अन्तर है।ब्रह्मा बाप सम्पूर्ण कर्मातीत हुये, इसलिए बाबा ने ब्रह्मा को प्रतीक कहा।मम्मा कर्मातीत अवस्था न पाकर एडवांस पार्टी को प्राप्त हुई।फालो तो हम महारथियों का भी करते।अव्यक्त ब्रह्मा दृश्यमान न होने के कारण फालो/ प्रतीक नहीं कर सकते।

उत्तर सं 8- A- अकाल तख्त

एक मुरली अनुसार जो सदा अकालतख्त पर बैठ कर कर्म करते हैं, उनके कर्म श्रेष्ठ होते हैं क्योंकि सभी कर्मेन्द्रियां लॉ और ऑर्डर पर रहती है । दूसरी मुरली में मैं अकाल तख्त और दिलतख्त पर बैठ सदा श्रेष्ठ कर्म करने वाली कर्मयोगी आत्मा हूँ। अकालतख्त पर .... कर्मेन्द्रियां लॉ और ऑर्डर पर रहती है । दूसरी मुरली वरदान है।जहां प्रश्नानुसार कर्मेन्द्रियां लॉ और ऑर्डर वाक्यांश नही है।राज्यतख्त तो सुखधाम के सन्दर्भ में है।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

खण्ड -2

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें........

प्रश्न न. 1- परमपिता परमात्मा पतित सृष्टि को पावन करते हैं अथवा कौड़ी जैसे कंगाल भारत को क्या बनाते ?

A- सोने की चिड़िया

B- हीरे जैसा सिरताज

C- स्वर्ग

D- B और C

E- A,B और C

प्रश्न सं 2- बच्चों की बुद्धि कितने प्रकार की होती है ?

A- त्रिकालदर्शी बुद्धि

B- कभी एककालदर्शी

C- अलबेली बुद्धि

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 3- कौनसी आत्मा को पास्ट और

फ्युचर भी इतना ही स्पष्ट होता है

जैसे प्रेजेन्ट स्पष्ट है?

A- त्रिनेत्री वाली

B- त्रिकालदर्शी स्थिति

C- दिव्य बुद्धि वाली

D- उपरोक्त सभी सही हैं।

प्रश्न 4- -जो एक दो को सुख देते हैं।

उनको कहा जाता है कौनसा

सम्प्रदाय ?

A- ब्राह्मण सम्प्रदाय

B- क्षत्रिय सम्प्रदाय

C- देवता सम्प्रदाय

D- B और C

प्रश्न सं 5 - सर्व सम्बन्धों का रस वा

अनुभूतियां करना ही क्या है?

A- अनुभवीमूर्त

B- मध्याजीभव

C- मनमनाभव

D- B और C

प्रश्न सं 6- देहभान छोड़ने की मेहनत नहीं

करो लेकिन किसमें स्थित रहने का

अटेन्शन रखो?

A- देही-अभिमानी

B- स्वमान

C- विदेही स्थिति

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 7 -मुझ अपने पारलौकिक

परमप्रिय परमपिता परमात्मा को

नहीं जानते हैं उनको क्या कहा जाता है ?

A- शास्त्रवादी

B- आस्तिक

C- नास्तिक

D -A और C

प्रश्न सं 8--- कौनसी शक्ति के आधार से

ज्ञान खजाने को अपना बना लो तो

विघ्न विदाई ले लेंगे?

A मनन शक्ति

B चिंतन शक्ति

C एकाग्रता की शक्ति

D उपरोक्त सभी

खण्ड -2 प्रश्नोत्तरी के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1- B - हीरे जैसा सिरताज

अनेक मुरलियों मे यह महावाक्य है-बाबा कौड़ी जैसे कंगाल भारत को हीरे जैसा सिरताज (रत्नों में हीरे को सर्वश्रेष्ठ) बनाते हैं। बाबा ने दूसरी मुरलियों में कौड़ी जैसे कंगाल के समतुल्य शब्द पतित दुनिया/ रावण राज्य को सोने की चिड़िया और स्वर्ग बनाने की बात की हे। उत्तर ABC हीरे जैसा सिरताज,सोने की चिड़िया ,स्वर्ग तीनों विकल्प पर्यायवाची (मिलते-जुलते अर्थ)है।

इस विचार सागर मंथन से D विकल्प सही हो रहा। स्वर्ग और सोने की चिड़िया के सन्दर्भ मे कौड़ी से कंगाल का उल्लेख मुरली मे नही।पर अनेक मुरलियों कौड़ी जैसे......... हीरे जैसा सिरताज होने के कारण बाबा के महावाक्य सिरमौर होने के कारण विकल्प D सही है।

उत्तर सं 2- D उपरोक्त सभी

हम ब्राह्मण का पुरूषार्थ क्रमवार/नम्बरवार है।शिव बाबा ने हम बच्चों को तीनों कालों भूत, भविष्य, वर्तमान बनाकर त्रिकालदर्शी बना तो दिया है,पर ब्रह्मावत्सों में कुछ एक कालदर्शी कुछ अलबेले बनकर सब त्रिकालदर्शी नहीं रह पाते है। मुरली अनुसार-बच्चों में तीन प्रकार की बुद्धि वाले एक त्रिकालदर्शी दूसरे... एक कालदर्शी। *तीसरा नम्बर*.... अलबेली.....

उत्तर सं.3- C दिव्य बुद्धि वाली

बाबा ब्रह्मा तन में अवतरित होकर ब्राह्मण धर्म के बल से अपने में खोये हुए बेहोश बच्चों को दिव्य बुद्धि देकर अपना बनाते हैं...

ईश्वरीय जन्म की गोल्डन गिफ्ट दिव्य बुद्धि देता है, दिव्य बुद्धि मिली तभी त्रिनेत्री व त्रिकालदर्शी बन पाए

उत्तर सं 4- C देवता सम्प्रदाय

ब्राह्मण अभी पुरूषार्थी हैं, विकर्मो को चुक्तु कर रहे तो एक दो को सुख और विकारों के वशीभूत होकर एक दूसरे को दुख भी देते हैं। स्पार्क विंग की पुस्तक में बाबा का अव्यक्त मुरली के महावाक्य का उद्धरण है कि त्रेतायुग में लोगों में कुछ खिटपिट शुरू हो जाती है। इसलिये सतयुगी दुनिया के देवता एक दूसरे को सुख देते है।यह साकार मुरली मे भी यही उत्तर है।

उत्तर सं 5- C मनमनाभव ।

सर्व सम्बन्ध का तात्पर्य शिवबबा से पिता, माता प्रेमी,पुत्र आदि सम्बन्धों (सर्वश्रेष्ठ सम्बन्ध पिता) से है।जिसकी अनुभूति महसूसता/FEELING तभी कर पायेंगे जब मनमनाभव अर्थात् स्वयं को आत्मा समझकर एक बाप को भिन्न भिन्न सम्बन्धों से याद करेंगें- (मुरली शब्दकोश के अनुसार यह अर्थ) तो ब्राह्मण जीवन में अनुभवीमूर्त/ स्वरूप बन श्रेष्ठ पद के अधिकारी बनेंगे

मध्याजीभव अर्थात् ब्रहमा और शंकर के मध्य विष्णु पद स्वर्ग में बनने से है। अनुभवीमूर्त विकल्प पूरी तरह मनन योग्य नहीं है।

उत्तर सं 6-B स्वमान।

देहभान को छोड़ने के लिए बाबा मुरलियों में दुहराते रहते है बच्चे देही/आत्माभिमानी ,विदेही बनो कहते है,पर बच्चे घड़ी घड़ी भूल जाते है। ब्रह्मावत्सों के लिए यह स्थिति कड़ी चुनौतीपूर्ण होती है। पर स्वमान का अभ्यास हमें देहभान छोड़ने मे सहज बनाता है।हर स्वमान में आत्मा शब्द जुड़ा है।जो हमें देहभान से मुक्त करता है। योग,बाबा की याद भी देहभान से मुक्त करती है। उसमे भी हम घड़ी घड़ी भूल जाते है।

उत्तर 7- C नास्तिक

अर्थात् ईश्वर को न मानने वाले । शास्त्रवादी या ऋषि मुनि भी ईश्वर के सम्बन्ध में नेति,नेति कह कर कहते हैं हम परमात्मा के विषय में नहीं जानते। उसी तरह भक्त भी अज्ञानतावश ईश्वर को न समझ अंधश्रद्धा से न सत्य जानकारी जानते हुए भी भक्ति करते रहते है वे ईश्वर के सच्चे स्वरूप को नहीं जानते,परन्तु ईश्वर

के विषय और सत्य जानकारी न होते हुए भी पारलौकिक पिता को भिन भिन्न रूपों जानते मानते हैं।सत्य परिचय

जब बाबा स्वयं आकर परिचय देते है तभी पूर्ण रूप से जानना सम्भव है।

शास्त्रवादी सत्य स्वरूप न समझने के कारण ईश्वर को ब्रह्म मानकर ब्रह्मलोक मे ध्यान लगाते थे। जो उसका निवास स्थान है।तुलसी के भगवान दशरथनन्दन राम थे,पर कबीर के राम (साखियो में राम नाम लिया है) निर्गुण निराकार थे।पर बाबा कहते है मै ज्योति स्वरूप ़हू मेरा आकार है। शास्त्रवादियो ने दिव्य बुद्धि से श्रीकृष्ण आधारित गीता और रामायण आदि लिखी जिसमे परमात्मा सम्बन्धित सच्चाई तो है. यहां एक विशेष जानकारी कि श्रीमद् भागवत पुराण में श्रीकृष्ण और गोपियों का उल्लेख तो है पर राधा का नही।

राधा का सर्वप्रथम उल्लेख सर्वप्रथम संस्कृत के विद्वान जयदेव ने 7 वी शताब्दी में गीत गोविंद के रचयिता जयदेव ने किया। उसी के आसपास न सिर्फ कलयुग बल्कि अव्यविभिचारी भक्ति देवी देवताओं की शुरू हुई। हिंदी में 12 वी शताब्दी मे बिहार मैथिली के कवि ने राधा कृष्ण को आधार बनाकर कविताएं की भक्ति

भाव से पर बाद के कवियों ने राधा कृष्ण पर श्रृंगारिक कविता कर बहुत ग्लानि की।

उत्तर सं -8- A - मनन शक्ति

सर्व खजानों ज्ञान,गुण, शक्ति का विशेष आधार है ... मनन शक्ति और उसका आधार भी संकल्प शक्ति है। महावाक्य अनुसार ... मुरली से स्वमान की सीट पर रहने के लिए मनन चिंतन ... ज्ञान, गुण और शक्तियों रूपी खजाने ... अतः उत्तर A सही। बाबा ने कहा चिंतन को समाप्त कर ज्ञानरत्नो से स्वयं को भरपूर कर शुभचिंतन का खजाना अपने अंदर भरने का पुरुषार्थ करना। है.यह विकल्प पूरी तरह गलत है। एकाग्रता की शक्ति स्वमान,योग फरिश्ता स्थिति में अहम भूमिका निभाती है,ज्ञान मे मनन/विचार सागर मंथन होने से विचार चलने से पूर्ण एकाग्रता की स्थिति नहीं रह जाती। महावाक्य अनुसार एकाग्रता की शक्ति हर आत्मा के सम्बन्ध में स्नेह, सम्मान, स्वमान के ...। और “मन को एकाग्र कर, एकाग्रता की शक्ति द्वारा फरिश्ता स्थिति का अनुभव करो”